तुलसी
कॉमिक्स
संख्या
मूल्य 6.00
धोखा घड़ी

हर वर्ष मई व जून के महीने में विश्वजीत अपने कुछ मित्रों को साथ लेकर हवेली में आ जाता था और ताश के खेलों के अतिरिक्त शिकार आदि में समय गुज़ारता था –

तू हमेशा चाल चलने में देर लगाता है।
बिना सोचे समझे मैं कोई पत्ता नहीं फेंकता।
और सोच समझ कर चाल चलने के बाद भी हारता है

तभी–
धांय....धांय...धांय...
अरे!
गोली की आवाज़।
इस जगह पर गोली चलाने वाला कौन होगा?

शायद कोई शिकारी है।
चलो बाहर चलकर देखते हैं।
फिर अपनी-अपनी बन्दूकें लेकर –

वह सभी हवेली के बाहर आ गए–
क्यों भाई मनोहर? यह फ़ायरिंग की आवाज़ कैसी थी?

पता नहीं साहब। मैं अभी देखता हूं।
ठीक है तुम उधर जाकर देखो। हम इधर देखते हैं।

वह सभी मित्र चारों ओर फैल गये—
कहीं डाकू न हों!

कुछ ही देर में सब वापस लौट आए—
कहीं कोई नज़र नहीं आया!
लेकिन गोलियां तो चली थीं!
जंगल में ही कोई शिकारी रहा होगा!

चलो यार! खेल का मज़ा क्यों खराब कर रहे हो? चौकी-दार तो देख ही रहा है उसे!

सभी वापस कमरे में लौटने लगे कि तभी—
अरे यह क्या?
खून के धब्बे!

खून! इसका मतलब यहां कोई आया है!
यह धब्बे अन्दर तक गए हैं!

आओ, इन धब्बों का पीछा करें!
हां...हां, चलो!

वह लोग धब्बों के सहारे शयनकक्ष तक पहुंच गए–
ओह! इसका मतलब है शयनकक्ष में कोई है!

विश्वजीत ने ठोकर मारकर दरवाज़ा खोला, फिर सावधानी से सब लोग भीतर आए–

वह रहा!
उसके पास रिवाल्वर है बचके!
?!

ज़ख्मी अजनबी ने उन पर गोली चलानी चाही पर ...
... उफ़! गोलियां समाप्त हो गईं–
चिट-चिट

रिवाल्वर खाली था। अचानक उस अजनबी व्यक्ति ने पलंग के नीचे से निकल कर विश्वजीत के पांव पकड़ लिए-
!?
मुझे क्षमा कर दो। मुझे मत मारो
तुम कौन हो? तुम्हारे शरीर पर खून कैसे लगा है?
!!?
मैं कौन हूं? अ...क...क्या मतलब? त...तो फिर तुम वह नहीं हो?
क्या बकवास कर रहे हो? मैं विश्वजीत सिंह चौहान हूं। यह हवेली मेरी ही है। तुम चोरों की तरह मेरी हवेली में क्यों आए हो?
ओह! तब तो ठीक है। सुनो! म...मैं बहुत जल्दी में हूं अपना परिचय फिर कभी दूंगा। इस समय मैं तुमको अगर एक चीज़ दूं तो क्या तुम उसे सम्हाल कर रख सकोगे?...
क्या तुमको किसी से खतरा है?
कुछ दुश्मन मेरे पीछे लगे हुए हैं वह कुछ ही देर में यहां पहुंच सकते हैं।...
...मैं जीवित रहा तो महीने भर में तुमसे वापस ले लूंगा। और यदि मैं नहीं आया तो तुम उस चीज़ को नष्ट कर देना। बोलो, क्या तुम मेरी सहायता करोगे?
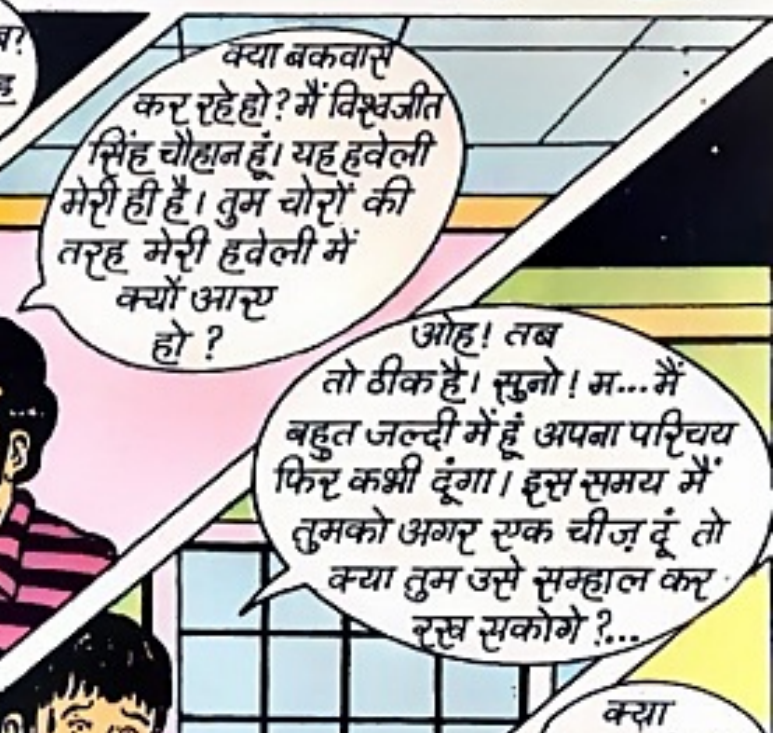
...मैं उससे पहले ही यहां से भाग जाना चाहता हूं, वर्ना मेरे कारण तुम लोग भी मुसीबत में फंस जाओगे।
बोलो, मेरी सहायता करोगे?
मैं सहायता का वचन देता हूं पर तुम अपनी ड्रेसिंग करवा लो, मैं अभी फर्स्ट-एड-बाक्स लाता हूं।
!!
ओह नहीं...!
अजनबी ने अपनी जेब से एक डायरी निकाली-
...तुम भले लोग हो! तुम्हारी यह भलाई तुमको भी मेरे साथ मुसीबत में डाल सकती है। मुझे यहां से जाने दो। और...!
अजनबी ने डायरी विश्वजीत को दे दी-
DIARY
...यह मेरी अमानत है। इसे कहीं सुरक्षित जगह रख दो।
डायरी लेकर विश्वजीत ने उसे खोलना चाहा पर-
?!!
ईश्वर के लिए इसे मत खोलो। यह मेरी अमानत है। अगर तुमने इसे खोला तो तुममें और उन लोगों में कोई अन्तर नहीं होगा
ठीक है। मैं इसे तब तक नहीं खोलूंगा, जब तक तुम वापस न आ जाओ। पर तुम्हारे शरीर से तो काफी खून निकल रहा है। मेरी बात मान कर ड्रेसिंग करवा लो।

तुम मेरी चिन्ता मत करो बस! मुझे हवेली से बाहर जाने में मदद करो।
ठीक है! जैसा तुम उचित समझो!

कामता! मेरे विचार से तुम सभी लोग बन्दूकें ले लो। हमें इसकी बात का ध्यान रखना चाहिए, और मनीष! तुम मेरे साथ इन्हें सहारा देकर बाहर ले जाने में मदद करो।

दोनों ने मिलकर अजनबी को सहारा दिया, उसी समय-
धांय! धांय! धांय!
वह... वह आ गए!
?!
?!

तुम पलंग के नीचे छुप जाओ! हम उन्हें देखते हैं!
जल्दी आओ! विश्वजीत!

सभी लोग अपनी-अपनी बन्दूकें लेकर हवेली के बाहर आ गए-
अगर हमें किसी ने अन्दर जाने से रोकने का प्रयत्न किया तो हम दस्ती बमों से हवेली को खण्डहर में बदल देंगे। हम हवेली में रहने वालों से बात करना चाहते हैं।
!!
?!!
!
!!
?!

विश्वजीत ने एक मिनट कुछ सोचा, फिर बोला-
ठीक है आ जाओ। किन्तु यदि तुमने कोई ग़लत हरकत की तो हम भी चूहे नहीं हैं! अ... आओ..!

दूसरी तरफ कुछ क्षणों तक खामोशी रहने के बाद अंधेरे में चार साए नजर आए-
?!
!!
!?
!

वह कहां है?
कौन वह?

वही जो अभी यहां आया था!
हम उसे देख नहीं सके। हमने सिर्फ एक साए को दीवार से कूदते हुए देखा था। हम उसे पकड़ पाते कि वह अंधेरे में गुम हो गया!
हम लोग हवेली की तलाशी लेना चाहते हैं।
हमें कोई आपत्ति नहीं है। तुम लोग तलाशी ले सकते हो।
तलाश करो उस कमीने को! वह हमें हर हालत में मिलना ही चाहिए
चारों नकाबपोश हवेली में फैल गए!
अगर वह लोग उसे तलाश करने में सफल हो गए तो हम उनसे मुकाबला करेंगे, चाहे परिणाम कुछ भी हो!
!!
जीत हमारी ही होगी। हम नौ हैं और वे लोग सिर्फ चार।

लगभग पन्द्रह मिनट बाद वह चारों लौट आए–
हमारे कारण आप लोगों को कष्ट हुआ। हमें क्षमा करें!

लेकिन वह था कौन?
वह एक खतरनाक कातिल और चोर है। वह हमारे साथियों को मारकर एक कीमती चीज़ छीन लाया है। अब हम उसे तलाश करने जा रहे हैं। कम्बख्त पता नहीं कहां चला गया है।
यह कहकर चारों वहां से चले गए–

भगवान का शुक्र है कि वह उसे ढूंढ नहीं पाए। पर यह तो कहते हैं कि वह एक खतरनाक कातिल है!

बेकार के झमेलों में न पड़ो। मैं तो कहता हूं कि उसे डायरी समेत पुलिस के हवाले कर दो।

पर उस डायरी में क्या रहस्य होगा?

कुछ भी हो हमसे क्या मतलब? सारा खेल का मज़ा किरकिरा कर दिया।

ठीक है भाई! जैसी तुम्हारी इच्छा! आओ उस अजनबी को देखें!
वह लोग शयन कक्ष में पहुंचे–
अरे वह तो यहां नहीं है।
खिड़की खुली हुई है। शायद वह चला गया।
काफ़ी खोजने के बाद भी जब अजनबी नहीं मिला तो–
अब क्या करें? क्या पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दी जाए?
मेरे विचार से पहले इस डायरी को पढ़ लो, आखिर इसका क्या रहस्य है?
हां, विश्वजीत! यही ठीक रहेगा!
विश्वजीत ने डायरी खोली–
अरे! इसमें तो उर्दू में लिखा हुआ है। इसे तो वक़ार वास्ती ही पढ़ सकेगा।
लाओ मैं देखता हूं!

वक़ार वार्सी ने पढ़ना शुरू किया--
ज़िन्दगी का रंग विचित्र है, इंसान जीने के लिए क्या-क्या नहीं करता? पर मौत तो आती ही है। सारमन भी मौत की तनहाइयों से बच न सका। उसने नवाबगंज के पुराने...
...खण्डहरों के मंदिर के ज़मींदोज़ तहखाने में एक मूर्ति देखी थी, जो सात मन वज़नी है और असली सोने की है।
वकार वार्सी ने पूरी डायरी पढ़ कर सुना दी--
बहुत विचित्र बात है। नवाबगंज के पुराने मंदिर व खण्डहर तो मैंने देखा हुआ है।
न जाने यह डायरी कितनी पुरानी है? और इस अजनबी को कैसे प्राप्त हो गई?
सारमन मर चुका है। मूर्ति अभी भी वहीं पर है। इस डायरी को लिखने वाला भी शायद अब जीवित न हो। इस...
...समय इस डायरी का मालिक कौन है?
तुम... तुम कहना क्या चाहते हो विकास?
सिर्फ यह कि अब यह डायरी हमारे पास है, क्यों न हम इसका लाभ उठा लें?

त... तो क्या तुम वह मूर्ति प्राप्त करना चाहते हो?
इसमें हर्ज ही क्या है? विश्वजीत!
कीमती खजाना भाग्य से ही हमारे हाथ लग रहा है तो अवसर का लाभ न उठाना तो बेवकूफी ही कहलाएगी।
विकास ठीक कह रहा है विश्वजीत!
हुम्म! बात समझ में आ रही है।
हम लोग आठ हैं। आठों ही इस राज से परिचित हो चुके हैं। सोने की वह मूर्ति हमें प्राप्त हो गई तो हम उसमें से बराबर के हिस्सेदार होंगे। मेरे विचार से इसके लिए कोशिश करना गलत नहीं होगा!
परन्तु नम्रता! इस कार्य में कोई दुर्घटना भी तो हो सकती है। इतिहास गवाह है कि खजानों के चक्कर में हज़ारों ज़िन्दगियां मौत के आगोश में चली गई हैं!
मुझे पता है, पर खजाने आज भी वही दिलचस्पी रखते हैं, और फिर इसमें दुर्घटना वाली बात आ ही नहीं सकती! सीधा-साधा रास्ता और सीधी-साधी बात है।

कुछ देर सभी चुप रहे! फिर वकार वार्सी ने चुप्पी तोड़ी -
हम तुम्हारे साथ हैं विश्व-जीत! हम यहां मौज मज़े के लिए तो आए हैं ही साथ में एडवेंचर भी सही
तुम ठीक कहते हो वकार!

तो फिर ठीक है, आज और कल तैया-रियां कर लो। परसों सुबह हम सब चलेंगे अपनी इस मनोरंजक यात्रा पर!
हिप..हिप... हुर्रे!

और दो दिन बाद वह लोग दो जीपों में सवार होकर नवाबगंज की ओर चल दिए -

शाम तक वह लोग नवाबगंज पहुंच गए -
यह मन्दिर तो खण्डहरों के बीच में बना हुआ है।
लेकिन जीप तो आसानी से जा सकती है।

अभी जीपें वहां मत ले जाओ। पहले यहां से चारों तरफ का निरीक्षण करेंगे, फिर वहां पहुंचेंगे।

मनीष जोसफ दूरबीन साथ लाया था, उसने दूरबीन से चारों तरफ का निरीक्षण किया-
जगह तो बिलकुल सुनसान और खौफनाक सी है।

जब अंधेरा छा गया तो वह सब मन्दिर के निकट पहुंचे-
टार्च जला लो, और वकार तुम यहां रुककर पहरा दोगे।
ठीक है! मूर्ति मिलने पर मुझे सूचना भिजवा देना।

सातों लोग मंदिर में प्रवेश कर गये-
कितना - रहस्यमय सा लगता है यह मंदिर!
तुम ठीक कह रहे हो विश्वजीत!

यह रहा पत्थर! डायरी में इसी का ज़िक्र था!
!!

हां, यही है। अब सब लोग मिलकर इसे हटाओ!
कोई एक टार्च की रोशनी दिखाता रहे!

सभी ने मिल कर पत्थर हटा दिया -
अहा! हट गया!
हमारी मेहनत सफल हो गई!

यह तो कोई गुफा सी लगती है!
उन सीढ़ियों से नीचे उतरो!

सभी सीढ़ियां उतरने लगे -
ध्यान से नीचे उतरना। आगे बहुत अंधेरा है!

तहखाने में पहुंचकर -
यहां तो बहुत सीलन है।
बदबू भी काफी है।
अहा... मिल गई मूर्ति। ठोस सोने की।
अद्भुत!
बेमिसाल!
उफ! शुद्ध सोने की मूर्ति!
मूर्ति तो मिल गई! अब आगे क्या करें?
मेरे विचार से इसे रातों रात निकाल कर ले चलना चाहिए। सुबह तक हम हवेली में पहुंच जायेंगे।

तुम्हारा सुझाव मुझे पसंद आया पर, इस मूर्ति को निकालना बड़ा टेढ़ा काम है!

हम उन रस्सियों से काम लेंगे जो साथ लाए हैं।
ठीक है भावना, तुम ऊपर चली जाओ और रस्सियां ले आओ।
अभी जाती हूं।

भावना, रस्सियां ले आयी-
अब इसे मूर्ति के चारों तरफ लपेटना है।

सातों मित्रों ने मूर्ति को रस्सी से बांधा और उसे ...
..फर्श पर गिराने लगे-

बंध गई। अब इसे ऊपर ले चलना है।
तो चलो काम में लग जाओ।

वह लोग पूरा जोर लगाकर मूर्ति को ऊपर ले जाने लगे–

काफ़ी प्रयत्नों के बाद वह लोग मूर्ति को मन्दिर के बाहर ले आए–
शुक्र है! मूर्ति ऊपर तक तो पहुंच गई।
हां, पर अब थोड़ा आराम कर लेना चाहिए इतने में ही थककर चूर हो गए हैं!

सातों वहीं बैठकर सुस्ताने लगे–
वक़ार को यहीं बुला लो!

मनीष जोसफ़ वक़ार वास्ती को बुला लाया–
अरे! तुम लोग मूर्ति निकाल लाए!
हां, पर काफ़ी मेहनत के बाद!

कुछ देर आराम करने के बाद –
चलो ! अब इसे जीप तक ले चला जाए !
आठों मित्रों ने मिल कर अथाह परिश्रम से मूर्ति को एक जीप पर रख दिया। तभी अचानक –
धांय... धांय... धांय...
?!
?!
!!
!
ओह !... हमलोग
बन्दूकें भी
जाए हैं। यह
सकते हैं ?
उसी समय कुछ हथियार बंद सारए वहां प्रकट हुए –
!!
?!
क.. कौन हो तुम लोग
!?
?!!
!!

यह वही नकाबपोश थे जो पहले हवेली में भी उनसे मिल चुके थे। इस समय इनकी संख्या दस थी —
बहुत खूब, हमारी ज़िन्दगी भर की भागदौड़ पर आप इस तरह पल भर में पानी फेर देना चाहते थे, ठाकुर साहब
तें... तें तुम...?
!?

हां, ठाकुर साहब ! हमलोगों को उसी समय संदेह हो गया था, जब वह बदमाश आपकी हवेली में गया था। मुझे विश्वास था कि उसने आपको इस .....
... बहुमूल्य मूर्ति के बारे में बता दिया होगा या फिर वह डायरी दे दी होगी। और हमारा विश्वास ठीक निकला, दो दिन बाद आप सब हवेली से गायब हो गये और हम लोग ...
...आपका पीछा करते हुए यहां आ पहुंचे। हा-हा- हा-

लेकिन तुम इसे इतनी आसानी से नहीं ले जा सकते!

आप हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं ठाकुर! वैसे भी आप दौलतमन्द हैं। इतनी दौलत का आप क्या करेंगे? जब कि इसी दौलत से हम साधारण लुटेरों की क़िस्मत चमक सकती है!

तुम इस मूर्ति का क्या करोगे? वैसे भी तुम इसे आसानी से बेच नहीं सकते! वर्ना कानून से बचना मुश्किल हो जाएगा।

हम इसके कई टुकड़े कर के बेचेंगे!
पर हमने भी इस काम में मेहनत की है! बल्कि, हमने ही इसे खोजा है। यदि वह डायरी हम नष्ट कर देते तो...?

हम इससे इन्कार नहीं कर रहे हैं! इस लिए एक विचार पेश कर रहा हूं! आप लोग भी इसमें अपना हिस्सा लगा लें!
अं... यह सुझाव हमें पसंद है!

देखिए हम दस हैं और आप आठ हैं। कुल अट्ठारह हिस्से सबको मिल जाएं तो बेकार के खून-खराबे से हम और आप दोनों ही बच जाएंगे!
यानि जब तक मूर्ति बिक नहीं जाती तुम हमारे साथ ही रहोगे?

इसके लिए भी एक रास्ता है, आप इस मूर्ति की कीमत का अंदाज़ा लगाकर अट्ठारह हिस्से कर दीजिए जिसमें से दस हमें देकर मूर्ति आप ही ले जाइए।

तुम्हारी बात हमें पसन्द आयी। हम तुमको कैश रूपये दे देंगे, शेष हमारा सिरदर्द होगा!

ठीक है, परन्तु इसका क्या प्रमाण है कि आप अपने वचन पर अटल रहेंगे ?
यदि हमने हेरा-फेरी की तो तुम लोगों के हाथ में हथियार तो हैं ही। फिर हमने जो सौदा तय किया है, उससे मुकरना कायरों का काम है।

ठीक है ! अब बताइये कि आप हमें कितनी कीमत देंगे इस मूर्ति की ?
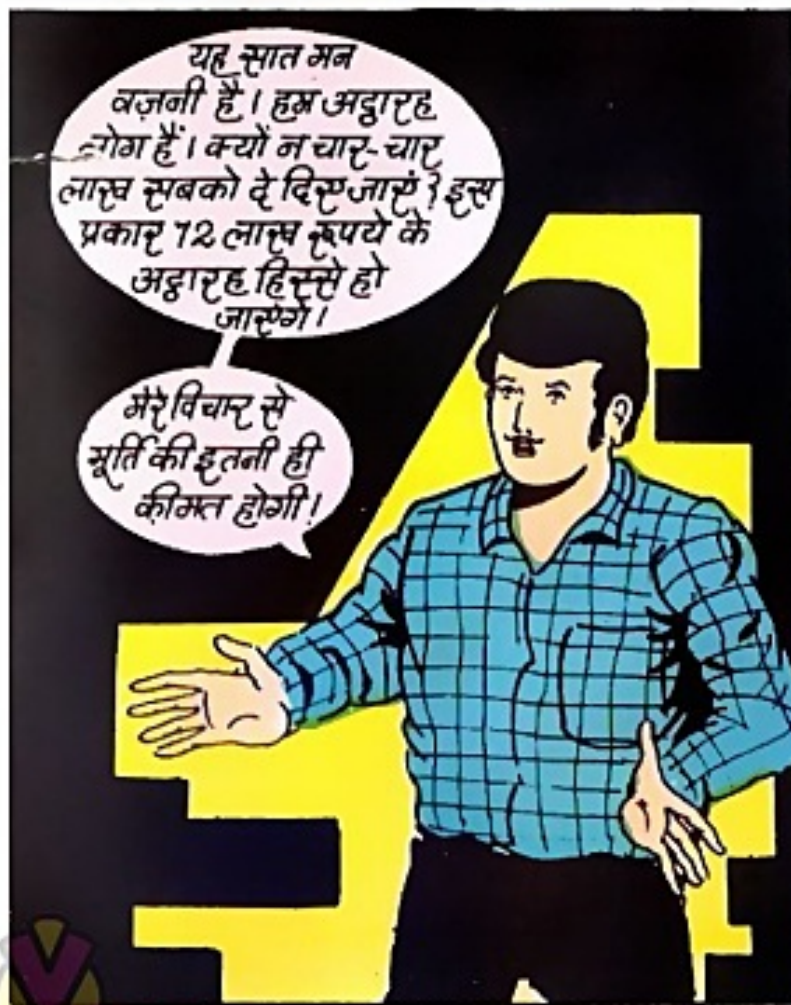
यह सात मन वज़नी है। हम अट्ठारह लोग हैं। क्यों न चार-चार लाख सबको दे दिए जाएं ? इस प्रकार 72 लाख रुपये के अट्ठारह हिस्से हो जाएंगे।
मेरे विचार से मूर्ति की इतनी ही क़ीमत होगी।

हुम्म ! यानि कि हम सबके हिस्से में चार-चार लाख रुपये आएंगे !

तुलसी कॉमिक्स
क्या, विचार है मित्रों? चार लाख की रकम मेरे विचार से तो काफी है ही, साथ ही मूर्ति को बेचने के झंझट और रिस्क से भी हम लोग बच जाएंगे!
हमको चार-चार लाख का सौदा पसन्द है। हम इस से सहमत हैं।
और हम लोग भी सहमत हैं!
अगर ऐसा है तो फिर सौदा पक्का!
वह तो ठीक है, लेकिन अगर आप ने बाद में कोई चालाकी दिखाई तो परिणाम भयंकर हो सकते हैं!
ओ. के. दैट्स आल-राइट!
मैं एक क्षत्रिय हूं! अपनी बात से पलटना मैंने जीवन में कभी भी नहीं सीखा है, यदि हमने कुछ गलत किया भी तो उस की जिम्मेदारी मैं स्वयं उठाऊंगा!

पर यह तो आपने बताया ही नहीं कि चालीस लाख रुपया आप हमें कैसे देंगे?
हम मूर्ति को लेकर अपनी हवेली चलते हैं! वहां मैं चालीस लाख का चेक दे दूंगा। मेरे किसी आदमी के साथ तुम्हारा कोई भी आदमी जाकर बैंक से चेक कैश करा लेगा फिर मूर्ति हमारी हो जाएगी!
हुम्म! विचार तो अच्छा है, पर वहां से शहर ज्यादा दूर नहीं है, शहर में आपके जान-पहचान के सैकड़ों लोग होंगे, कहीं आप...।
ऐसा कुछ नहीं होगा। क्या मैं मूर्ख हूं, जो मूर्ति का रहस्य सबको बताता चलूं और इसके हिस्से होते रहें? पर हां वहीं अगर तुमने रुपये और मूर्ति दोनों ले लिए तो...?
हम लुटेरे ज़रूर हैं, पर हमारा भी ईमान है। आप हम पर विश्वास रखिए!
ठीक है! हम विश्वास कर लेते हैं। अब हमें चलना चाहिए!

पहले मूर्ति को तिरपाल से ढक दीजिए वर्ना रास्ते में बेमतलब कोई भी बखेड़ा हो सकता है।
ओह! मैंने यह तो सोचा ही नहीं था!

मूर्ति को तिरपाल से ढक दिया गया –
अब चलो!

और फिर दो जीप व दो कारों का काफिला चमनगंज की ओर रवाना हो गया –

इस बहुमूल्य मूर्ति को प्राप्त करने की जितनी प्रसन्नता पहले थी, अब नहीं रही।
चालीस लाख व्यर्थ में डूब गये।
WILLS

यदि ऐसा न होता तो दूसरी सूरत में मूर्ति भी हाथ से निकल जाती और जान खतरे में पड़ जाती सो अलग।

अब भी कोई हानि उठाने वाली बात नहीं है विकास! मूर्ति लगभग दो करोड़ की तो है ही। चालीस लाख निकल जाने पर कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा?

यानि कि बीस लाख हर व्यक्ति के हिस्से में... इतना तो बहुत है। दोस्तों!

काफिला हवेली पहुंचा, मूर्ति को अन्दर ले जाया गया-

बिश्वजीत ने चालीस लाख रुपये का एक चेक काट कर नकाबपोश को दिया-
यह रहा चेक। अब अपना एक आ--दमी भेजकर बैंक से रुपये मंगा लें।
धन्यवाद! आपके किसी मित्र के साथ मैं स्वयं बैंक जाना पसंद करूंगा!

नम्रता, तुम इसके साथ चली जाओ
ठीक है चलो!

उन दोनों के जाने के बाद-
बब्बू! काफ़ी बना कर ले आओ सब के लिए।
जी मालिक! अभी लाया!

कुछ देर बाद सभी काफ़ी पी रहे थे-
काफ़ी आप ही लोग पीजिए हम नहीं पियेंगे... वैसे हम लोगों का तो सौदा तय हो गया पर आप इस विशाल मूर्ति को बेचेंगे कैसे-?
यह हमारा सिरदर्द है। फिलहाल अभी कुछ सोचा नहीं!

लगभग एक घण्टे बाद नम्रता वापस आयी–
काम हो गया विश्वजीत!

वैरी गुड!
इस समय यहां चालीस लाख कैश और वह मूर्ति! यह लोग हथियारों से लैस हैं, कहीं रुपयों के साथ मूर्ति भी न ले लें!

नकाबपोश ने सभी से हाथ मिलाया और फिर विश्वजीत से बोला–
इस सह-योग के लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं। बिना खून-खराबा किए ही हम सबका कार्य पूरा हो गया।

हमें भी प्रसन्नता है कि आप लोग वादे से मुकरे नहीं। और सौदे की ही रकम ले जा रहे हैं!

फिर दसों नकाबपोश वहां से चले गए–

उनके जाने के बाद –
उफ चलो बला छूटी !
वादे के पक्के लोग थे। नहीं तो मेरा दिल हर पल धड़क रहा था।
फिर भी सौदा मंहगा नहीं रहा।

तुम मंहगे की बात कर रहे हो ? जबकि हमने उन्हें मूर्ख बना दिया है। सात मन सोने का मूल्य फिर भी दो-तीन करोड़ तो होगा ही !

हां, यह तो है ही।
अब आगे क्या सोचा है ?

हम इस मूर्ति के टुकड़े करके चोर बाजार में बेच देंगे। जो मिलेगा उसमें से चालीस लाख अलग करके बाकी रुपये आठों व्यक्ति बराबर-बराबर बांट लेंगे !
हमें मंजूर है!

तभी चौकीदार मनोहर अन्दर आया –
साहब आपके नाम का पत्र !
?!

किसने दिया?
फाटक पर पड़ा हुआ था साहब, आपका नाम देखकर उठा लाया!

हुम्म! ठीक है। तुम जाओ!
अच्छा साहब!

विश्वजीत ने लिफाफा खोला उसमें एक पत्र था –
अरे! न...नहीं यह नहीं हो सकता!
क्या हुआ, किसका पत्र है?

यह... यह ... पीतल की मूर्ति है!
क्या?
प... पीतल..? त.. तुम पत्र पढ़कर तो सुनाओ!

पत्र पढ़ा गया, जिसमें लिखा था –
प्रिय मित्रों,
शानदार सहयोग के लिए हम आपके
आभारी हैं। वास्तव में 40 लाख रुपये की
रकम कम नहीं होती है। इसके बदले में मैं
आपको एक सिरदर्द से मुक्त करना चाहता
हूं, वह मूर्ति शुद्ध पीतल की है, जिस पर सोने
का पानी चढ़ा हुआ है। इस योजना का
मुख्य पात्र वही अजनबी है जिसने आपको
डायरी दी थी। डायरी उसी ने लिखी थी,
मूर्ति भी दो दिन पहले तहखाने में रखी
गई थी।
आगे आप स्वयं समझदार हैं।
वैसे मैं विश्वास करता हूं कि आप –
हमारे एहसानमंद होंगे, क्योंकि आप
बेकार में मूर्ति के टुकड़े-टुकड़े करके
उन्हें बाजारों में लिए फिरते।
अच्छा अब विदा!
"आपका हमदर्द दोस्त"
सारी मेहनत पर पानी फिर गया!
चालीस लाख का चूना लग गया!
हाय रे सोने की मूर्ति!
उफ़!
समाप्त

अंगारा का महासंग्राम 15/-